मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 3

MHD-01

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम. ए. हिन्दी)
(एम. एच. डी.)
सत्रांत परीक्षा
जून, 2023
एम.एच.डी.-01 : हिन्दी काव्य—I
(आदि काव्य, भक्ति काव्य एवं रीति काव्य)

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : *कुल* ***चार*** *प्रश्नों के उत्तर देने हैं।* ***प्रथम*** *प्रश्न अनिवार्य है। शेष प्रश्नों में से किन्हीं* ***तीन*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

---

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 2×10=20

(क) साधो, देखो जग बौराना।

साँची कहौ तौ मारन धावै झूँठे जग पतियाना।
हिन्दू कहत है राम हमारा मुसलमान रहमाना।
आपस मैं दोऊ लड़े मरतु हैं मरम कोई नहिं जाना।
बहुत मिले मोहिं नेमी धर्मी प्रात करैं असनाना।
आतम-छोडि पषानै पूजैं तिनका थोथा ज्ञाना।
आसन मारि डिंभ धरि बैठे मन में बहुत गुमाना।

(ख) अबलौ नसानी, अब न नसैहौं।

राम-कृपा भव-निसा सिरानी जागे पुनि न डसैहौं॥

पायो नाम चारुचिंतामनि, उर कर ते न खसैहौं।

स्यामरूप सुचि रुचिर कसौटी, चित कंचनहिं कसैहौं।

परबास जानि हँस्यो इन इन्द्रिन, निज बस ह्वै न हँसैहौं।

मन मधुकर पन कै तुलसी रघुपति-पद-कमल बसैहौं॥

(ग) निर्गुन कौन देस को बासी ?

मधुकर ! हँसि समुझाय, सौंह दै बूझति साँच, न हाँसी॥

को है जनक, जननि को कहियत, कौन नारि, को दासी ?

कैसो बरन भेस है कैसो केहि रसै में अभिलासी।

पावैगो पुनि कियो आपनो जो रे ! कहैगो गाँसी।

सुनत मौन ह्वै रह्यो ठग्यो सो सूर सबै मति नासी॥

(घ) फागु के भीरे अभीरन तें गहि गोबिंद लै गई भीतर गोरी।

भाई करी मन की पद्माकर ऊपर नाई अबीर की झोरी।

छीन पितंबर कंमर ते सु बिदा दई मीड़ि कपोलन रोरी।

नैन नचाइ कह्यो मुसकाइ लला फिर आइयौ खेलन होरी॥

2. गीतिकाव्य के रूप में 'विद्यापति पदावली' की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 10

3. कबीर साहित्य के मूल्यांकन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए। 10

4. 'पद्मावत' में निहित लोकतत्व का विवेचन कीजिए। 10

5. मीरा की कविता में अभिव्यक्त प्रेमानुभ्ति और प्रेम विह्वलता का विवेचन कीजिए। 10

6. घनानंद के काव्य-कौशल का परिचय दीजिए। 10

7. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए :

$2 \times 5 = 10$

(क) 'पृथ्वीराज रासो' का काव्य-रूप

(ख) तुलसी की लोकमंगल भावना

(ग) सूर की काव्य-भाषा

(घ) बिहारी की शृंगारिकता